प्रकृति विज्ञान का पूर्ण सौन्दर्य मानव सुगन्ध की साज

अशोक मानव

प्रकृति का विस्तार जीवों की विकासोन्मुखी प्रक्रिया का परिणाम है जो वैज्ञानिक तरीके से सूर्य और जल के मिलने से होता है। सूर्य प्रकाश जल पर पड़ने से जल का जो भाग जलता है वह हवा बनकर ऊपर जाता है जिससे सूर्य और जल के बीच ऐसी परतों का निर्माण होता है जो निश्चित तापमान बनाती है । जिससे जलीय जीव का निर्माण होता है। यही जलीय जीव जब अपना शरीर छोड़कर जाता है, जो पदार्थ के रूप में परिवर्तित होता है यही पदार्थ इकट्ठा होकर जमीनी सतह का निर्माण करता है। जिसमें बिल बनाकर रहने वाले जीव की उत्पत्ति होती है। बिल बनने से हवा और प्रकाश अन्दर तक पहुँच जाती है जिससे रसायनिक परिवर्तन होता है जो जमीन को उपजाऊ बनाता है जिसमें वनस्पति की उत्पत्ति होती है । इसी प्रकार वैज्ञानिक तरीके से अनेको जीव की उत्पत्ति होती है। जिससे प्रकृति का विस्तार निरन्तर होता रहता है। अलग-अलग प्रजाति के जीव द्वारा छोड़ा गया शरीर अलग-अलग गुण को छोड़कर जीवों की प्रजाति को बढ़ाते जाते हैं। ये जीव सुनिश्चित गुण को धारण करके गुणात्मक पदार्थ को बढ़ाते जाते है। इस प्रकार जीव से पदार्थ और पदार्थ से जीव की उत्पत्ति की वैज्ञानिक प्रक्रिया चलती रहती है। जिससे प्रकृति का निरन्तर विस्तार होता रहता है। हर जीव का अपना महत्व होता है। कोई भी जीव अकारण नही होता है। हर जीव गुणात्मक पदार्थ का निर्माण करने के लिये पैदा होते है । यह तभी संभव होता है जब जीव स्वाभाविक रूप से अपना शरीर छोड़ते हैं। जिस पदार्थ से जीव परिपक्व पदार्थ बना पाते है उसी को अपना आहार बनाते है। यह प्रक्रिया स्वाभाविक आर्कषण से पैदा होती है। गन्दगी में पैदा होने वाले जीव गन्दगी को ही अपना आहार बनाकर गन्दगी से उत्पन्न होने वाली दुर्गन्ध को जान लेवा होने से रोकते है और गन्दगी को खत्म करके परिपक्व पदार्थ का निर्माण करते है। इस प्रकार पदार्थ की गुणात्मकता बढ़ती जाती है। जिससे सुन्दर प्रजाति के जीव पैदा होते हैं। जीवों द्वारा निरन्तर प्रकृति के सजाने की प्रक्रिया चलती रहती है। इसी वैज्ञानिकता से प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ता रहता है और हजारो साल बाद मानव जैसे सौन्दर्य पूर्ण प्राणी की उत्पत्ति होती है।

प्रकृति में जीव की उत्पत्ति जीव द्वारा उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा खत्म करके गुणों का निर्माण और पदार्थ का विस्तार करने के लिये होती है। इसी से प्रकृति का विस्तार होता है। मानव के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य जीव जिस गुण का विस्तार करने के लिये आते है। उसी गुण का विस्तार करते है। पर मानव प्रकृति का सबसे अधिक सौन्दर्य पूर्ण प्राणी होने के कारण किसी भी गुण को उत्पन्न कर सकता हैं। भोजन हर जीव की आवश्यकता होती है। पर किये गयें भोजन से शरीर में जिस पदार्थ का निर्माण होता है, उस पर उसकी सोच का प्रभाव होता है । सभी जीव अपने एक निश्चित स्वभाव को धारण करते है। जिससे एक निश्चित गुण का विकास करते है। जो शरीर छोड़ने के बाद रसायनिक परिवर्तन के बाद मिट्टी में व अन्य पदार्थ में बदल जाता है, जो स्थायी पदार्थ का रूप ले लेता है और हमेंशा अपने गुण को छोड़ता रहता है, जो प्रकृति निर्माण और जीव उत्पत्ति में अपने गुण को प्रदान करता रहता है। मानव अनेको इच्छाओं को पैदा करता रहता है। जिससे उसके शरीर में बनने वाले पदार्थों में अनेक गुण आ जाते है। मानव शरीर में पैदा होने वाली इच्छा से गुणात्मक प्रकाश बनता है, जो शरीर के अन्दर आने वाले भोजन का रासायनिक परिवर्तन